P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वामी विवेकानन्द के विचारों का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन

अतुल कुमार मिश्र
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
म0गा0चि0ग्रा0 विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना (म0प्र0) भारत

सारांश

ज्ञानयोग, भक्तियोग, प्रेमयोग, कर्मयोग, राजयोग, देववाणी, पत्रावली, हिन्दू धर्म के पक्ष में, धर्म तत्व, प्राच्य एवं पाश्चात्य, धर्म क्यों? मेरे गुरूदेव व्यावहारिक जीवन में वेदान्त शिक्षा, कर्म रहस्य, हमारा भारत आदि पुस्तकों में स्पष्ट होते हैं। विवेकानन्द जी ने कहा था कि हमारी दो ही समस्याएं है 'दरिद्रता और अशिक्षा'।[1] दरिद्रता का कारण भी हमारी अशिक्षा है। इसलिए वह जहाँ कहीं भी गए, शिक्षा का प्रचार किया। खेतड़ी नरेश राजा अजित सिंह की छत पर भौतिकी की प्रयोगशाला खुलवा दी। लंदन से मँगवाकर एक टेलीस्कोप लगवा दिया। उन्होंने कहा कि जिन जातियों को शिक्षा से वंचित रखा गया है, उन्हें शिक्षा दो वे भगिनी निवेदिता को स्त्री शिक्षा में प्रोत्साहन करने के लिए शिक्षा मिशनरी बनाकर भारत लाए।[2] सिस्टर निवेदिता का कहना था– '' स्वामी जी के जो भी शिक्षा सम्बन्धी सुझाव रहे हैं उनमें निहित शिक्षा तत्व के ठोस सिद्धान्तों ने सदैव मुझे चकित किया है। इसी प्रकार पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था– ''भारत के अतीत में अटल आस्था रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए भी विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण आधुनिक था और वे भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक बड़े संयोजक थे। उनका लक्ष्य–समाज सेवा के द्वारा मानवता की सेवा करना तथा सामाजिक जागरूकता को पैदा करना था।''[3] इस शोध पत्र का उद्देश्य उनके विचारों का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन सार रूप में प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्द : शिक्षण विधि, बौद्धिक विकास, अभिव्यक्ति, प्रभाव।

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि तुम्हारें दिमाग में ऐसी बहुत बातें इस तरह ठूँस दी जाएँ, जो आपस में लड़ने लगें और तुम्हारा दिमाग उन्हें जीवन में हजम न कर सके। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलानें योग्य है। यदि तुम पाँच ही भावों को हजम कर तदनुसार जीवन और चरित्र गठित कर सके हो तो तुम्हारी शिक्षा उस आदर्श की अपेक्षा बहुत अधिक है, जिसने एक पूरी लाइब्रेरी ही कंटस्थ कर ली है।''[4] ''शिक्षा क्या है? क्या वह पुस्तक–विद्या है? नहीं! क्या वह नाना प्रकार का ज्ञान है? नहीं! यह भी नहीं। जिस संयम के द्वारा इच्छा शक्ति का प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है वह शिक्षा कहलाती है।''[5]

उन्हीं के शब्दों में ''शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''[6] स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्यों को लैकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं। उनका यह मानना था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखी नहीं होते हैं तब तक ज्ञान, भक्ति और योग ये सब कल्पना की वस्तुएँ है। नरेन के शब्दों में ''जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्रबल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है? जिस शिक्षा के द्वारा जीवन में अपने पैरों पर खड़ा हुआ जाता है, वही है शिक्षा।'' इस प्रकार की शिक्षा को ये ''मनुष्य के निर्माण की शिक्षा'' कहते है।[7]

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द जी ने नव वेदान्त का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने युवकों के सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा को सर्वोत्तम साधन माना हैं। वे शिक्षा द्वारा ऐसे नवयुवकों का निर्माण नहीं करना चाहते थे जो अपने लिए जीवन जियें बल्कि शिक्षा प्राप्त करके समाज का सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करें। स्वामी जी ने तत्कालीन शिक्षा की आलोचना करते हुए कहा था कि इस शिक्षा द्वारा मनुष्य में मनुष्यत्व का विकास नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह शिक्षा लिपिक (क्लर्क)

बनानें वाली है तथा अधिकाधिक सूचनाएँ प्रदान करने का साधन मात्र है। उनका कहना था कि यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना प्राप्त करना है तो ''पुस्तकालय सबसे बड़े सन्त और शब्दकोश सबसे बड़े महान ऋषि है।''[8] स्वामी जी मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर बल देते हैं। अतः स्वामी जी की दृष्टि में शिक्षा के उद्देश्य हैं–

1. अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति।
2. शारीरिक विकास।
3. मानसिक एवं बौद्धिक विकास।
4. वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास।
5. चारित्रिक विकास।
6. धार्मिक विकास।
7. राष्ट्रीयता का विकास।
8. विश्व चेतना एवं विश्व बन्धुत्व भावना का विकास।
9. व्यावसायिक क्षमता का विकास।
10. आत्मविश्वास, श्रद्धा और आत्म त्याग की भावना का विकास।

पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानन्द के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार बहुत क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रतिपादित नहीं है, फिर भी उनके द्वारा विभिन्न अवसरों पर दिए गये व्याख्यानों से पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार जाने जा सकते हैं। स्वामी जी के अनुसार पाठ्यक्रम में सभी विषयों को सम्मिलित किया जाए जिनके माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति के साथ–2 भौतिक उन्नति भी हो। उन्होंने विशेष रूप से सभी के लिए संस्कृत के अध्ययन पर बल दिया जिससे वे धार्मिक साहित्य का अध्ययन कर सकें। उनके अनुसार धर्म शिक्षा की आत्मा है। उन्होंने धर्म को साधना, अनुभूति और आत्म साक्षात्कार माना है।[9] उन्होंने विषयों के प्रकारों पर जिन्हें विद्यार्थियों को पढ़ना चाहिए कुछ सामान्य निर्देश दिये हैं–

1. आध्यात्मिक पूर्णता के लिए उन्होंने धर्म, दर्शन, उपनिषद, साधुसंगत तथा उपदेश को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।
2. धार्मिक शिक्षा के लिए उन्होंने गीता, उपनिषद तथा वेदों को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना। ये हमारी आध्यात्मिक शिक्षा के आधार हैं।
3. भारत के उत्थान के लिए वैज्ञानिक शिक्षा और पाश्चात्य विज्ञान को भी आवश्यक बताते हैं। उनका कथन है कि ''अंग्रेजी, पाश्चात्य विज्ञान तथा यान्त्रिकी की शिक्षा ग्रहण करके, हमें अपने उद्योग धन्धों की उन्नति और विकास करना चाहिए। जिससे हम स्वावलम्बी बन सकें और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सकें।''[10]
4. सभी विद्यालयों में बल देनें की आवश्यकता है और इन्हें पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पढ़ाया जाना चाहिए।
5. लड़कियों को खाना पकाना, सुई धागे का काम, बच्चों का पालन पोषण, अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान का अध्ययन कराना चाहिए।
6. देश में व्यापार, वाणिज्य, उद्योग आदि के संगठन के ज्ञान की आवश्यकता है, इसलिए उनके अध्ययन को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। अन्य विषयों के साथ कौशलों, हस्तकलाओं तथा व्यावसायिक विषयों को उनके अध्ययन के पश्चात् अपनी आजीविका कमाने के योग्य बनाना चाहिए तथा विद्यार्थी को आत्म निर्भर बनाना चाहिए। आध्यात्मिक पूर्णता के लिए उन्होंने धर्म, दर्शन, उपनिषद, साधुसंगत तथा उपदेश को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

सारांश रूप में पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है– ''अतीत में जो कुछ हुआ वह सब हम ग्रहण करेगें। वर्तमान में ज्ञान ज्योति का उपयोग करेगें और भविष्य में आने वाली बातों को ग्रहण करने के लिए अपने दरवाजे खुले रखेगें।''[11]

शिक्षण विधि

स्वामी विवेकानन्द सभी प्रकार के ज्ञान को अर्जित करने की विधि मन की 'एकाग्रता' को माना है। उन्हीं के शब्दों में ''मेरे विचार से तो शिक्षा का सार मन की एकाग्रता प्राप्त करना है, तथ्यों का संकलन नहीं। यदि मुझे फिर से अपनी शिक्षा आरम्भ करनी हो और यदि इससे मेरा वश चले तो मैं तथ्यों का अध्ययन कदापि न करूँ। मैं मन की एकाग्रता और अनाशक्ति का सामर्थ बढ़ाता और उपकरणों के पूर्णतः तैयार होने पर उससे इच्छानुसार तथ्यों का संकलन करता।''[12] स्वामी जी के अनुसार बालक को स्वाभाविक ढ़ंग से सीखने का अवसर देना चाहिए क्योंकि ''तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी प्रकार असमर्थ हो जैसे किसी पौधे को बढ़ने में।''[13] पौधा अपनी प्रकृति का विकास स्वयं करता है, बालक भी अपने आपको शिक्षित करता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्होंने निम्नलिखित शिक्षण विधियों पर बल दिया–

1. एकाग्रता की विधि।
2. योगविधियों द्वारा चित्त की वृत्तियों का विरोध करना।
3. विचार विमर्श और चिन्तन विधि।
4. वैयक्तिक निर्देशन एवं परामर्श विधि।
5. भाषण विधि।
6. स्व–अध्ययन विधि।
7. यात्रा या भ्रमण विधि।
8. प्रेम, विश्वास और श्रद्धा।

शिक्षा का माध्यम

विवेकानन्द जी ने मातृभाषा के द्वारा भाषाओं के शिक्षण पर बल दिया। मातृभाषा के अतिरिक्त एक सामान्य भाषा भी होनी चाहिए जो देश के एकता के सूत्र बाँधने के लिए आवश्यक है। क्षेत्रीय भाषा के साथ–साथ इसे भी सिखाया जा सकता है। स्वामी जी के अनुसार ''संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं का स्रोत है। इसलिए यह पूर्णतया आवश्यक है कि सभी भारतीयों को संस्कृत का ज्ञान होना चाहिए। उन्होंने यह महसूस किया कि इस ज्ञान के अभाव में भारतीय संस्कृति को समझना असम्भव होगा।''[14]

शिक्षक

शिक्षक के विषय में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है ''सच्चा शिक्षक केवल वह है जो तत्काल छात्रों के स्तर पर आ सकता है और अपनी आत्मा को छात्रों की आत्मा में हस्तान्तरित कर सकता है और छात्रों की आखों के

माध्यम से देखता है और उसके कानों के माध्यम से सुनता है और अपने मस्तिष्क के माध्यम से समझता है। इस प्रकार का शिक्षक वास्तविक रूप में पढ़ा सकता है और कोई नहीं।''[15] नरेन्द्र ने ठीक ही कहा है ''शिक्षक एक दार्शनिक मित्र तथा पथप्रदर्शक है जो शिक्षार्थी को अपने ढ़ंग से अग्रसर होने में सहायता करता है।''[16] स्वामी जी शिक्षक में अच्छे गुणों (1. शास्त्रों का ज्ञान 2. निष्पापता 3. निष्पक्षता 4. त्याग की भावना 5. उच्च चरित्र 6. प्रेम एवं सहानुभूति) के साथ उसकी कर्तव्यनिष्ठा को आवश्यक मानते थे। शिक्षक कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए नरेन्द्र ने लिखा है, ''वास्तव में शिक्षक का कार्य कुछ के परिवर्तन का कार्य है और छात्र में विद्यमान बौद्धिक अथवा अन्य योग्यताओं का उत्प्रेरण मात्र नहीं है। प्रभाव के रूप में कुछ वास्तविक और अवधारणीय शिक्षक से आता है और छात्र के प्रति जाता है। अतः शिक्षक को पवित्र होना चाहिए।''[17]

छात्र

स्वामी विवेकानन्द जी जिस प्रकार शिक्षक के लिए शिक्षकोचित गुणों को आवश्यक मानते थे उसी प्रकार शिष्य में भी कुछ गुणों की अपेक्षा करते थे। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है– ''शिष्य को विचार एवं वाणी में शुद्ध होना चाहिए। उसे ज्ञान की प्राप्ति के लिए अध्यवसायी और सच्ची प्यास रखनी चाहिए। उसे ब्रम्हचारी होना चाहिए। उसे सतत् संघर्षशील रहना चाहिए अपने को नरम स्वभाव से बाँधने के लिए स्वयं से सतत् लड़ाई लड़नी चाहिए तब ही वह विजय प्राप्त कर सकता है और सत्य ज्ञान अर्जित कर सकता है।''[18] स्वामी जी कहते हैं शिष्यों के लिए आवश्यक गुण इस प्रकार होने चाहिए–

1. शिष्य को मन वचन और धर्म से सत्य का पालन करना चाहिए।
2. शिष्य को पूर्ण ब्रम्हचारी होना चाहिए।
3. शिष्य में ज्ञान प्राप्ति की पिपासा, उत्कण्ठा, जिज्ञासा और उत्साह होना चाहिए।
4. मन की एकाग्रता एवं लगन के साथ परिश्रम करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए।
5. गुरू के प्रति अपार श्रद्धा नम्रता और अटूट विश्वास होना चाहिए।

गुरू शिष्य सम्बन्ध

स्वामी जी का अभिमत है कि शिष्यों में प्राचीन काल के विद्यार्थियों जैसा आत्म नियंत्रण, ब्रम्हचर्य तथा जीवन की सादगी बहुत आवश्यक है। गुरू के प्रति विद्यार्थियों का विश्वास एवं श्रद्धा होनी चाहिए। उसमें चिंतन की शक्ति हो तथा समर्पित भाव से यह ज्ञान प्राप्ति के लिए तत्पर रहे। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं– ''जिन देशों में इस प्रकार से गुरू शिष्य सम्बन्ध की उपेक्षा हुई वहाँ गुरू मात्र वक्ता रह गया है।..... अपने गुरू की पूजा ईश्वर की दृष्टि से करो पर उसकी आज्ञा का पालन आँख मूंद कर न करें, प्रेम उन पर पूर्ण रूप से करो, परन्तु स्वयं भी स्वतन्त्र रूप से विचार करो।''[19]

अनुशासन

स्वामी विवेकानन्द बालकों को शारीरिक दण्ड के प्रबल विरोधी थे क्योंकि शारीरिक दण्ड से अनुशासन की मूल भावना का विकास सम्भव नहीं है। इसके लिए उन्होंने स्वानुशासन को अधिक प्रभावशाली माना था और बालकों के साथ कठोर व्यवहार न करने का सुझाव दिया था उन्होंने सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करनें पर अधिक बल दिया था विवेकानन्द के शब्दों में ''एक पौधे उगाने की भाँति हम एक बालक को अधिक नहीं सिखा सकते जो कुछ कर सकते हो वह केवल नकरात्मक पक्ष है– तुम केवल सहायता कर सकते हो। तुम रूकावटों को दूर ले जा सकते हो। परन्तु ज्ञान अपने स्वभाव से ही आता हैं। मिट्टी को ढ़ीली छोड़ दो जिससे यह आसानी से ऊपर आ सके इसके चारों तरफ झाड़ियां लगी हों। देखो इसको किसी के द्वारा मारा न जाये और तब तुम्हारा काम समाप्त हो जाता है। तुम इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते हो शेष स्वयं के ऊपर से ही प्राकृतिक रूप से अभिव्यक्ति है।''[20]

जन शिक्षा

स्वामी जी ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक स्थान पर ऊपर किया तथा प्रत्येक की स्वतन्त्रता का समर्थन किया। उनके अनुसार जाति, स्थान, धन या गरीबी के आधार पर नहीं अपितु सभी को स्कूल जाना चाहिए। उनका यह विचार था कि शिक्षा प्राप्त करना मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है। स्वामी जी ने कहा था ''जिस अनुपात में जन समूह में शिक्षा तथा बुद्धि का प्रसार होगा उसी अनुपात में देश का विकास होगा।''[21] जन शिक्षा के प्रसार के लिए नरेन्द्रदत्त ने अपने पत्र में लिखा है ''मेरा दिल भर आया और तुम जानते हो क्यों? जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान के अंधकार में रह रहे हैं, मैं उस व्यक्ति को देश–द्रोही समझता हूँ, जिसे उनके खर्च पर शिक्षा मिली है और फिर उनकी ओर तनिक ध्यान नहीं देता।''[22] स्वामी जी कहते थे ''जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं की जाएगी तब तक अधिक से अधिक राजनीति भी होगी। वे हमारी शिक्षा के लिए धन देते है, वे हमारे मन्दिरों का निर्माण करते है पर इनकें बदले उन्हें निरादर मिलता है।''[23] मुट्ठी भर लोगों के हाथों बुद्धि का एकाधिपत्य नहीं होना चाहिए।

स्त्री शिक्षा

स्वामी जी ने कहा है ''हमें शिक्षा के द्वारा नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्या को अपने ढ़ंग से सुलझा सकें, उनके लिए यह काम न तो कोई कर सकता है और न तो किसी को करना चाहिए। हमारी नारियों में संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भाँति इसे करने की क्षमता है।''[24] स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों को भावी जीवन में व्यावहारिक कुशलता हेतु व्यावसायिक शिक्षा देने पर कहा है कि इतिहास, पुराण, गृह व्यवस्था और कला कौशल, गृहस्थ जीवन के कर्तव्य और चरित्र गठन के सिद्धान्तों की शिक्षा देनी होगी और अन्य विषय जैसे सिलाई, कढ़ाई, गृहकार्य नियम, शिशुपालन आदि भी सीखने होगें। जप, पूजा और ध्यान अनिवार्य शिक्षा के अंश होगें। दूसरे गुणों के साथ उनमें शूरता, वीरता और गौरव के भाव भी प्राप्त करने होगें।[25] स्वामी विवेकानन्द नें स्त्रियों की शिक्षा अनिवार्य रूप से देने की बात कही, ''किसी देश अथवा राष्ट्र की उन्नति स्त्री शिक्षा पर निर्भर करती है। जिस घर या देश

की स्त्रियाँ उदासीन एवं दुःखी जीवन व्यतीत करती हैं वह घर तथा राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता है। उन्हें शिक्षित करना हमारा पुनीत कर्तव्य हैं। एक शिक्षित स्त्री अपना कार्य जिम्मेदारी एवं कुशलतापूर्वक निभाती है उन्हें शिक्षित कर सीता, उर्मिला, सावित्री, आदि के समान तैयार करना है, जिन्हें लौकिक तथा धार्मिक दोनों प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए। शहर–शहर तथा गाँव–गाँव स्त्री शिक्षा केन्द्र खोलकर शिक्षित करना होगा।''[26]

निष्कर्ष

अगर आज हम उनकी एवं उनके विचारों की प्रासंगिकता की बात करते हैं तो हमें सहज ही यह मान लेना होगा कि वह उस समय से लेकर जब तक यह सृष्टि रहेगी, तब तक उतने ही प्रासंगिक रहेंगे। उन पर बहुत कुछ लिखा एवं कहा जा चुका है, उन सारी बातों से परे यदि कुछ है तो वह है उनका अतुलनीय दृष्टिकोण। यदि हम उनकी सारी बातों में से किसी एक बात को सूत्रवाक्य की तरह ग्रहण कर लेते हैं तो हमें जीवन को अर्थपूर्ण तरीके से जीने का मार्ग मिल जाता है। चाहे फिर वो उनका जय घोष ''तुम जैसा महसूस करोगे वैसे ही बन जाओगे'' या फिर उत्रिष्ठ जाग्रत प्राप्यवशन्निबोधता।[27]

अंत टिप्पणी

1. *सिंह ओ0पी0 शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ 170*
2. *जैन प्रदीप कुमार, विद्यामेघ, जनवरी 2008, अंक 125, पृष्ठ 34*
3. *वालिया, डॉ0 जे0एस0, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, पाल पब्लिशर्स, जालंधर शहर, पंजाब पृष्ठ 235*
4. *जैन प्रदीप कुमार, विद्यामेघ, अक्टूबर 2008, अंक 133, पृष्ठ 07*
5. *वही, पृष्ठ 08*
6. *स्वामी विवेकानन्द, एजुकेशन, पृष्ठ 6*
7. *स्वामी निखलानन्द, अनुवादक स्वामी विदेहात्मानन्द, विवेकानन्द एक जीवनी*
8. *श्री रामकृष्ण ज्योत पत्रिका, श्री रामकृष्ण राजकोट, वर्ष 17, अंक 08, माध्यम गुजरात*
9. *गुप्ता, रेनू, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, जे0पी0सी0, नई दिल्ली पृष्ठ क्रमशः 215,*
10. *राठौड, डॉ0 कुसुम लता, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ*
11. *स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा, श्री रामकृष्ण आश्रम नागपुर पृष्ठ 39*
12. *The complete works of swami vivekananda, vol.1, page 130&131*
13. *Ibid*
14. *गुप्ता, रेनू, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, जे0पी0सी0, नई दिल्ली, पृष्ठ 216*
15. *The complete works of swami vivekananda, vol.4, page 179*
16. *गुप्ता, रेनू, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, जे0पी0सी0, नई दिल्ली, पृष्ठ 217*
17. *The complete works of swami vivekananda, vol.III, page 51*
18. *Ibid,vol. IV, page 22*
19. *स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा, श्री रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, पृष्ठ 22–23*
20. *गुप्ता, रेनू, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, जे0पी0सी0, नई दिल्ली,*
21. *वही*
22. *जैन प्रदीप कुमार, विद्यामेघ, अक्टूबर 2008, अंक 133 पृष्ठ 08*
23. *वही*
24. *The complete works of swami vivekananda vol.V, page 23*
25. *स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा, श्री रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, पृष्ठ 43*
26. *सिंह ओ0पी0 शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ 184*
27. *श्री रामकृष्ण ज्योत पत्रिका, श्री रामकृष्ण राजकोट, वर्ष 17, अंक 08, माध्यम गुजरात पृष्ठ 328*